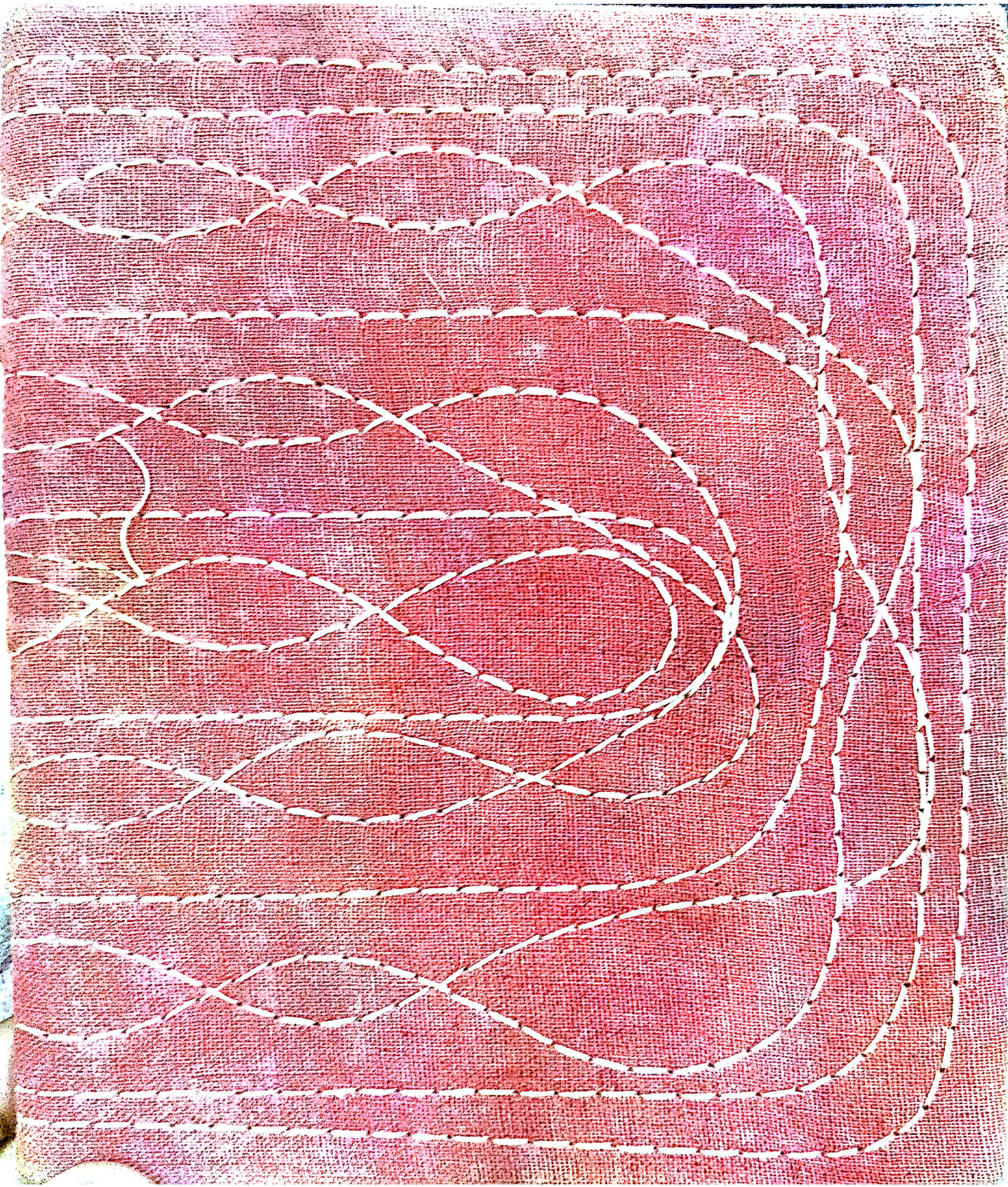

Scanned by CamScanner

श्री गणेशायः नमः ॐ श्री लक्ष्मये नमः

श्री कुबेराय नमः 卐 श्री गौरी शंकराय नमः

Scanned by CamScanner

ॐ श्री गणेशाय नमः

एकदंतो महाबुद्धि सर्व अग्यो गणनायका।
सर्व सिद्ध करो देवा गौरी पुत्र विनायका।
जननी जन्म सौखय नम।
वहुनी कुल सम्पदा।
पदवी पूर्ण पुण्य नम।
लिखते बालक कष्टावली विधान।

विक्रमी संवत २०५७ चैत्र मास शुक्ल पक्ष गुरुवार
द्वितीय नवरात्र सन ईस्वी ६ अप्रेल २००० शाका १९२२
द्वितीय तिथि

Scanned by CamScanner

ॐ श्री गणेशाय नमः। ॐ स्वास्ति नमः। अथ बालक चिकित्सा लिखते

॥दोहरा॥

प्रथम नमो श्री विष्णा को वा हरि धनंतर राय।
गुरु गणपति शारदा नमो दीजो वर सुखदाय॥

(१) प्रथम रोग लक्षण कहूँ बहुत उपाय
विधान मंत्र यंत्र और औषधि तंत्र बलि बषान

(२) गर्भ मास ते आदले बालक के सब रोग।
सकल व्याधि निष्टे टरे कह्यो धनन्तर योग॥

(३) अथ कच्चा मसान लक्षण॥

छंद॥

गर्भ सरावनि नारको जाको रोग सुनीजे।
कच्ची मूर्त डिग जाए तिसको कच्चे मसान भनीजे॥

Scanned by CamScanner

चार मास ते उपर गिरे सात मास के माहि यो भी
कच्चा मसान कहावे होर रोग कछु नाहि

॥ उपाय ॥

॥चौपाई॥ सुक्के सर की माटी आने। बट
जटा की माटी ठाने। सवा सेर सतनाजा मँगवावे
उल्टी चक्की पिसवावे। सात कूप का नीर मँगावे।
सतनाजा आटा जोए। इस नीर से गुँधवाऐ।
तयों आटा नारी पर मले। वह आटा उतार पूतला
करे। नैना माह दो मोत्रि धरे (मोत्रि = मूर्ति)

॥ दोहरा॥ कपडा लीजै चार गज चारों रंग कराऐ।
~~तिस पुतले ते कपडे मा लपटाऐ~~॥ एक नरेला पाटा
तामे धरो विचार के

॥ चौपाई॥ कच्चा करुआ सत्रर (गड्ढा)
चार लोहे की कीला। टेक सकल सामग्री छेक
करुवा धरो पिछे होर उपाय। करो सवा हाथ गड्ढा
खुदवावे सकल नारी पर धरे। फेर नारि को
देत छुवाय वस्त्र पुराने खड्डे बिच दबाऐ।
गड्डे ऊपर कील मेख लगाऐ। कच्चा मसान दूर
हो जाए। इस विधि से करे उपाय कहे

धनन्तर राय रोग दूर हो जाऐ।

॥दोहरा॥ नदी किनारे की जाय क्या चोराहा हेमा होय पूर्ण आशा जन्म ही कृपा राम की होय।

॥मंत्र॥ मंत्र जो पढ के कीजे कार राम कृपा नाहि आवे हवेहार। ग्रंथ विचकारि जो कोहि तापर मंत्रण कह सहि जो कोई कारि करे बना य मंत्र का जाप करे चित लाय

॥अथ मंत्र॥

ॐ नमो आदेश गुरु को आदेश

गफीरु काला भेष हमदार भेजे दो दरवेश। काली टोपी काला भेष। किलू मोहरा किलू मसान। किलू सम श्री शीस बाबे स्त्रि गरे बीच धरे होर उपाय॥ तिस का करै। सिरस वृक्ष की लकड़ी आने। ताकि पटड़ी एक बनावे। ले पटड़ी गडे ऊपर धरे। तां पर नारि मंजन करे।

॥दोहरा॥

ले पुराना टोकरा ले तली तलाय।
तापर कच्चे प्रान के वत्ति शकि चे व ला य॥

॥चौपाई॥ तास बीच नारी को निकाले। प्रथम यहि करीजे। सिर ते पाँव परे के ताईं सात वेर करीजै। गेरे ऊपर दीपक बाल के ठाडि नारी निकसे। मन से राम स्मरण कीजे। होवे पूर्ण आशी।

॥दोहरा॥ पाछे कहा कुआँ का नीर और सात कूप का जोय तेस नीर तें मंजन करे। गर्भ रखिये सोय।

॥चौपाई॥ वस्त्र पुराने दूरजो करे। नवीन वसन धारण करे।

॥दोहरा॥ विरे त्रोंया से चिथे धागा कमर बँधाय। मन में राम अराधे। पूर्ण मास सुख पाये॥

॥मन्त्र॥ ॐ नमो मेनाथ गोसाईं वांधो नदी बहने नीर बाँधो सभ कोट का शरीर हाड कीधन हडी मसान का बाण बाँधरे रक्षिया अमकी

Scanned by CamScanner

कामा भर्म तदे ज्ञान फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा
गुरु का
गुरु शब्द साचा।

॥अथ कच्चा मसान लक्षण॥

॥दोहरा॥ जाका बालक होय के जन्मत ही मर जाऐ। ताको कच्चा मसान है। होर रोग कछु नाहि। त्रिया को सप्त मास की चाह ना कर दे। वैद्यय धनन्तर कहत है। बालक को सुख होय

॥देव मसान लक्षण॥

॥दोहरा॥ [redacted]

नीला पीला होय क निशावासर उपर।
जाको होवे मसान हकी जे तुरत उपाय॥

देव होर की लू ना हो न भूत न छाया हो।
चपली ताकि छाया देव दूत परी बाँध चलाया
देव गए
तुमारी आशा निस मूठी उठती मोहिनी चला
घाटे पिंड की रक्षा करे। निंदा साह मदार सॉम
रख हाड रख चाम रख। दोह रख पिंड रख

Scanned by CamScanner

मन से खडे जाह नमो हन दोनो खडे खडाय
कीलो भैंर के बाण कीलो गुलास के बाण
कीलो फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा मेर का शब्द
साचा।

॥अथ गर्भ रक्षा का मंत्र॥

ढाई पूणी रवैस्तिन आने कन्या पास
कतावे। तिरिया को नख-शिख तक नापे।
२१ तार बनावे। मंत्र पढ के गाँठ देवे। इक्कीस
गाँठ लगावे। धूप दीप देवे। कडा हिरा जंघ
बनावे। डा मसान दूजे भगते तनमाह जन्मत
ही मर जाऐ। तिरत रज को कहो उपाय
धनन्तर कहे सिद्ध हो जाऐ।

॥इति अथ गर्भ स्रावति का उपाय॥

यंत्र पूर्व में कहू बनाय धर
चौंसठ वाले हगनाय नाम युगति कर बालक
बद्याय करे कडाहि कर मधुवाऐं। तिसका यंत्र
लिखते हैं।

Scanned by CamScanner

॥अर्घ यंत्र॥

१	६	१	६	१	६	१	६	यंत्र
२	१०	२	१०	२	१०	२	१०	यंत्र
३	११	३	११	३	११	३	११	नाम
४	१२	४	१२	४	१२	४	१२	नाम
५	१३	५	१३	५	१३	५	१३	रत्न
६	१४	६	१४	६	१४	६	१४	रत्न
७	१५	७	१५	७	१५	७	१५	ॐ ह्रीं
८	१६	८	१६	८	१६	८	१६	स्वाहा

॥उपाय॥

चार हाथ कपडा लीजे ताको चार रंग कीजे काला, पीला, स्याम, सफेद। सात पूडी कारा खो भेद। सात सर साहि[redacted] दाख, नवित्री नाथ फल, लौंग तीन धरीजे, मेंहदी केसर और अंचीर। सात पुडी से राखे पूर, सात नाज का पूतला करो सकल समग्री हाँडी धरो। ले बालक के शीश सुहाऐ। ढक्कन दे मुख

Scanned by CamScanner

खाम कराव। शाह मदार का पटै हाँडी।
चौंसहे गाडे

॥दोहरा॥ केरा खास कराय चार मेख गाढलाए।
वैद्य धनन्तर जो कहे दे मसाण कलाए॥
सात-आठ के अंतर त्रिया के बालक होय
कहते गुणीजन पंचमरे रंजना पावे कोय
होय तरंत
॥यदि उसे दीवाली को मुरदा जन॥ नजर आ
जाये तो दृष्टि मसान लक्षण हो। नारी जो उसे
भेद में मुरदा देखे तो नैन बालक साया
जानिऐ। सतलक्षण अरु चैन हाय पास सूके
रहे मुख चौंडा हो जाए छाया दृष्ट मसाण
कि होर रोग कछु ना हैं। ताप नही और
ज्वर नहि और ज्वर नही दिन सूकत देह
मसाण दृष्ट जो जानिऐ। ताके लक्षण यह
॥ताको उपाय॥
इति गुल्लर दूध मँगावे चौंहा गोली

ताहि बनावे। रक्ति-२ की गोली बनावे। गोली पर मंत्र पढावे। एक बालक एक माता खाय। सात दिवस लगा दियो बताय। दृष्ट मसाण भूत पर हरे सूक मसाण देहि टरे।

॥तिस का उपाय मंत्र॥

ॐ नमो देवी कहा चले पूर्व पश्चिम को चले। पश्चिम वासग चले। अंजनी पूत हनुमंत वीर देखे तिसं गति जरासंध सवा लाख पर्वत जितनी धपाईया अष्टो त्रसो दोष पचाईया। जो कुछ दोष होऐ सो पार ब्र पचाईया।

॥मंत्र विधि॥

कदणी बडे मंत्र कड पार पाई फुरो फुरे मंत्र ईश्वरोवाचा पुनः

॥दोहरा॥

यंत्र लिखे जो चतुराई अष्टगंध संयोग लिया बालक के गल बाँध सप्त जाऐ मिटे रोग

Scanned by CamScanner

॥अथ यंत्र॥

१८	२१	२४	११
२३	१२	१७	२२
१३	२६	१६	१६
२०	१५	१४	२५

॥अथ मृगाय लक्षणम्॥

प्रथम जो ज्वर की आभा होवे आवे जीव का बुरा सोवे। तन अचेत मुख आवे काग जाको मृगिया की लाग नेत्र जो जाके दुखत रहे। रोग अपार धनन्तर कहे।

॥तिस का उपाय॥

॥चौपाई॥ अष्टगंध जो ले मँगवावे। कस्कट रक्त जो तामस पाय। तिस साथ फिर यंत्र लिखाऐ। नाकर और पाम नैन स्वेत जो जातिये आकारा परि की छाय

॥ताको उपाय छंद॥ सवा सेर गेहूँ को ल्यावे बीडा एक मँगावे। सतनाज योगिनी कोरी हाँडी पावे। तिस बालक के सीस छुवावे। जल के कंडे धर आवे। वैद्य धनन्तर योंहि भाष्यो सप्त योगिनी जाऐ।

Scanned by CamScanner

॥पुनः॥

॥चौपाई॥ एक सराहि कोरी ल्यावो दही भात मे पावो। शीश छुवाइ मंडेर धरो आकाश परी का भय मत करो

॥यंत्र॥ सात पलीते गीन के लीजौ कटुक तेल कपडे पर कीजो। पुन बालक को धूणी दीजो। जापर जायो सखी करी पुन यंत्र कागज पर भरे। लिख कागज बालक आगे धरे। धूप देय बीच बंधाय बालक साया दूर पराय।

॥अथ छाया के लक्षण॥

॥चौपाई॥

गृह मे बालक अकेला सोव माता छाय जाइ। कित ठाई फेर देखत माता मयुगत गोरोचन भाय लिखे यंत्र बांधे गल माहि जायदेव फेर आवे नाहि।

॥पुनः॥

भेड तले की मटि ल्यावे तिस मिट्टी का पूतला बनावे सप्त सई दे तिसमै

Scanned by CamScanner

लाय। आगे युगत हौर बताय। चौर हाथ कपडा जो लीजे। चार रंग करीजे। काला, पीला, स्याम, सफेद। चार पुडी का राखो भेद

॥दोहरा॥

दाख जावित्री लिजियो जायफल लौंग मिलाय महंदी चंदन आन के और अंजीर मँगाय।

॥चौपाई॥

सात पुडी इनकी करे धरे च इ खाण कजो करे कोरी हाँडी एक मँगाईे। सकल सामग्री तिसमे पाय

॥दोहरा॥ बालक शीश चुआईे के जलमा देर खवाय करतव अपना कीजिईे आगे राम सहाईे।

॥अथ आकाश परी के लक्षण॥

॥दोहरा॥ नाको दृष्टम आकाश को कंपत आई। जागत बालक चिलचिलाई।

Scanned by CamScanner

॥दोहरा॥

माता दूध देत है बालक नहीं लेय।
आकाश परी जो ग्रस्त है। तुरत उल्टी कर दे।

॥उपाय॥

॥दोहरा॥ कच्चा कुंडा आन के काजल सिष सो लेष गुड़िया सत बनाऐ के। ले चौराहे देय।

॥ पुनः यंत्र ॥

यंत्र लिखते आठ का बालक के गल पाय सुख होवे बालक को छाया दूर पराय

४	४
४	४

॥ पुनः॥ चौतीस में पंदराह ~~करबो गंध~~ ~~से~~ धरो भोज गंध सो लिख धरे। धूप देय बालक के गल पाय। साया दूर- परे हो जाऐ।

Scanned by CamScanner

तिस नौ आदि यंत्र

॥अथ यंत्र॥

७	१२	१	१४
२	१३	१०	११
१६	३	९	५
९	६	१५	४

॥अथ योगिनी लक्षण॥

८	९	३
२	७	११
१०	४	६

छंद नैनन मूँद रह बालक नाहि नाह
नेके सुधि जो खोल सबमा माता पिया।
बत हजवज बमो नर हैं आंचल गहली जो
भय होर आनेक दिखावत योगिनी चक्र
सदा नस भारी करीजे। यंत्र एक उपाय कहूँ
अब चौंसठ योगिनी नाम के।

Scanned by CamScanner

॥अथ यंत्र॥

॥दोहरा॥ गंध संग यंत्र भरो बालक यंत्र करो गले बँधाय सकल व्याधसभ पर हरो बालक योगिनी छाया

॥अथ चौपाई॥

नारी सीस से बाँधयो सोय
सुख से बालक जन्म ही लखसो छाया खोय।

॥अथ यंत्र॥

८	७	५९	६	ॐ	६१	६२	३	१०
१६	१५	५२	५२	ह्रीं	५३	५४	१०	९
३३	३४	३०	१९	क्लीं	२९	२७	३९	४०
४१	५२	२२	२१	ह्रें	२०	१९	४७	४२
ॐ	ह्रीं	ह्रीं	क्लीं	ह्रीं	ह्रें	ह्रों	न	म
२५	२६	३८	३७	ह्रां	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४६	४५	ह्रों	४४	४३	२३	२४
५६	५५	११	११	न	१३	१४	५०	४९
६४	६३	३	५	मः	४	६	५९	५७

Scanned by CamScanner

॥अथ घाटी लक्षण॥

धनन्तरोवाच "नासा जो सूखी रहे गुदा गडा जो होय श्रवण जोको मल जानिऐ। बालक घांडी नैन कुंडली जाके पढे। तालूवो लेना ग्रीवा सूखी जिस बालक घांडी तां

॥तिस का उपाय॥ बाँवी जो माटि आन के बथु का बीज मिलाय। गुड जो पुराणा संग में लेके। तलवे ऊपर लाय"

॥पुनः॥ होर उपाय बताऊँ

पात आके के आने गो के घी के संग चोपड के गरम तवे पर ठाने। जब ही गरम पात हो जावे। ताका नीर कढावे। वै मखनि सोको मर्दन कीजे। किंचित न्हास दिवावे। सकल से द्वि को मर्दन कीजे। घांडी दूर हो जावे। धनन्तर ऐसा भासे सकल उपाय करावे

॥पुनः॥

॥चौपाई॥ दिना चार तु मना सदा ही। तप्त नीर कंठ मलि तिस अजवायण करे उपाय। कहे

धनन्तर घांडी जाय

॥पुनः दोहरा॥ काठा कीजे वाहि वाहि गीने वस्त्र छनाय स्नान करा के बालक को कंठ पीड मिट जाऐ।

॥पुनः चौपाई॥ आधी मिरचल ले आधी मिरचल ले ला जल गिरी पिसवा रि उर ऊपर कर दे। न्हासा ~~जो जाणे सो देवे न्हासा~~ कहे धनन्तर घांडि जा सा जाने विनान आवे पास देव न्हास छिंका जो लीजे बिना छीक मत धूनि देय।

॥अथ तिना मिलक्षण॥

जन्मत शिशु भारि रहे पाछे ऋकत जाऐ। विष्टा रि जावे हि गुदा रक्त सवाय तिसै तिनामी जानि। ये पण्डित करे विचार

॥तिस का उपाय॥

साठि चावल मह दिमेवे। तत्काल बालक को देवे। दो सीपी बालक को देवे।

दिन चालि लगा दियो बतावे। गर्भ हो वजव
करे उपाय। जाय रोग बालक बच जाए।
गर्भ वृध ना है पीजिये। लूण भोजन खाये।
घृत गौं के संग खाईये दो निपथ्य बताये

॥पुनः उपाय॥

॥चौपाई॥ कचनार की वकल ले मँगवाय
नीर पाय काडा बनवाये। प्रातः काल जो
पीवे नीर बालक सुखी नितावा टार।

॥अथ बादर जे लक्षण॥

॥चौपाई॥ सिर गर्दन दोनों सूखी
जाय पर पेट कान कपोल चढाय। माता
दूध बहुत जो प्यावे वह बालक को खोट
दिखावे। पेट चले मुख भिजल जाये। थंभेना है
कैसे है दाय। वैद्य धनन्तर ऐसे कहे रोग
अपार ता को दहे। माता गृह में दूधी
तुरत जो देय पहले घुटि ले ना है अंतर
तुरत जो लेय। सरवाद यह रंजह होर
रंज कछु नाहि वैद्यय धनन्तर कहो ताको

Scanned by CamScanner

रोग उपाय।

॥तिस का उपाय॥

॥दोहरा॥ जीरा स्वेत आन के महदे जल में भेय। साही चावल आन के उस बालक को देय।

॥अथ खुसक रोग लक्षण॥

॥छंद॥ सावन भादों मास जो होर कार्तिके काल। कवजीवहोवे सूके रहे कवह होवे लाल। बालका चिकित्स समजायके कहो धनन्तर ख्याल

॥तिस का उपाय॥

महंदी जड मना का रस वतिस बालक को दे। रालावडि मंगाय के बालक को सूंघन दो

॥अथ बालक अतिसार का उपाय॥ काक डुमि हिल्दी दुई ईं जौं अति सार। जवायण सो सोरठा सठ पापण जो भेद सो जीरा कुंड। मिलाय। तिस रीता में पाईये। नल दी नाय

Scanned by CamScanner

अतिसार बालक के हरे।

॥पुनः॥

॥दोहरा॥ बिल्व क थधावा लो दे ले
गलगल पीपल जौ पिसाय। मधु संग बालक
चटाइ। अतिसार मिट जाइ।

॥अथ बालक डबे का उपाय॥

॥चौपाई॥ केसर, गोलोचन ले
पाँव ले दूधी का दूध मिलाव देत बालक
डबा जाय।

॥पुनः चौपाई॥ जड तफते काना आने
सात गांठ का कान लाने। काना सोया
झाडा करे। डबा रोग बालक का हरे।
जिस-२ का नाव धता जाय डारो ता को
रोग कहाये। ~~अथ काडा सुहा पक के पेट~~
~~में~~ अथ काडा सुहा गाय के पेट में उपजिए
बछा। बछे के पेट में उपजिए काछा। काछे
के पेट में उपजिए कालजा। कालजा घटे
मय वधे मेरी भक्त गुर की सक्त फुरो

मंत्र ईश्वरोवाचा।

॥अथ बालक के डबे का यंत्र॥

॥दोहरा॥ रविवार मृग चर्मर यंत्र लिखयो। बनाय बाल ग्रीवा बाँधीऐ। डबा रोग नसाऐ।

३३	३२१	२७
३३	६६	३७
३७	४३	६७

अथ जिस को मसाण तथा जिस को गर्भ रहता हो तिस का उपाय मंत्र→ ॐ नमो हनुमान हठीला लौहे की लाठ वज्र का कीला। उडदा वेद पठताकाया मार हाक हनुमंत जगाया। जाग-जाग रे औसर जाग महादेव की आज्ञा पाय ब्रह्मा की कुंजि शिव का ताला काचे पिंड का महादेव रखवाला। उस पिंड का तरख वाला शबद साचा पिंड काचा। चलो मंत्र ईश्वरोवाच। इस मंत्र सौसर्व मसाणि जाय।

डोर कताये २। नारि कमर बँधाय गर्भ थमे

॥पुनः दोहरा॥

हुलहुल पाते आम के तामे जवायन
उपाय छूटि दीजे रगड के रोग मसाण जाऐ।

॥अथ कंवेडे का उपाय॥

हाथी सुंडी आन के तामे जवायन
पाय। ताजो दीजे बालक को रोग कंवेडा
जाए।

॥अथ कंवेडा लेप॥

गंगा जल गो दुग्ध मँगावे गोमूत्र
तिल दाम मिलावे। ~~उसे जल~~ उस लेप
लभे दहन लाय। यहि सम बोट ईवताय

॥पुनः॥

लहसन, जवायन पीस के जल सो
पाये नहाये। होय कृपा भगवान की रोग
कंवेडा जाए।

Scanned by CamScanner

॥अथ जिस स्त्रि का बालक ना जीवे तिस का उपाय॥

१	५	७
११	१५	२
२५	१००	१५
६	१२	९

एक कोरा घडा मँगावे स्नान कर ताको भर वावे फेर एक ब्राह्मण को बलाव ताते पिछे होर विध करे।

॥पुनः॥ खडि होवे जव चाहि नारि उज्जल होय के करे तैयारि। रवि सुत दिन पीपल पे जाय। ताकि कृपा कह समगाय। एक छुटिया कुजिया मँगवावे। भर-२ घडे सो पीपल सँजावे भर कुजिया गेरे सौ बार कौतरमी उस में डार यह एक मास कर कै घर आवे। कर पूडे जो ब्राह्मण को जमावे। ताको बला उज्जल भोजन जमावे। सवा चार गज कपडा दे दान ताकि आगे कहूँ विधान। यहि काम प्रात को कीजे। संध्या समय गहिना दीजै। कसुंभि कपडा ले मँगाय ताकि छे फेर गुडिया छे कोयले ल्याये। उन गुडिया के आगे

धरवाय। शुभ एक गुड्डा घुंघट वाला करे। उसे गुड्डे के आगे धरे। भोग सरवत का चिद्र सिल्यान भर कुलिया विच धरावै। एक तमाषुयात धरावे। चावल घी बूरा पावे गोबर का दिवा बनावे। ताहि बाल के विच धरावे चावल होर तिस नारि लेय

ध्याय। एक उपला सुलगता ल्यावः। तिस गहणे के साथ ले जाय। नदी किनारे दै धराऐ।

॥ अथ तिस स्त्री के बालक सुक जाऐ तिस का उपाय॥

एक कुनाली कोरी ल्यावे। जांह विच समग्री धरावे। एक कडौली लेह मँगाय ताको परांदे से बनवाय। एक गुड्डा गुलाबी करो। उसि षटोले ऊपर धरो। पद गुड्डिया तिस के आगे धरे। तिन को ही जो काजल पाया। पुड्डिया योह छलपावे। उन गुड्डिया के आगे धरो। तिस गुड्डे के आगे यः

Scanned by CamScanner

मस्तक सिंदूर गुड़े के लावे। ताहो एक कनाली पर धराव तिनो कुलिया लेत मँगाय कच्ची लस्सी शरबत भांग धराय तमाखु की चिलम धराऐ। बूरा चावल घी धरवाऐ। ~~एक~~ चून का दिवा करै। चमुखावाल तहालो धरै।

॥दोहरा॥ गुड़ा नालि पर इस्त्री को छुहाय कै तिनवार शीस छुवाय एक गोहा सुलगता ताकि ह्वै नदी किनारे जाऐ। नालि पर जिमि सो गाडियै उपर चीज रखाय अर्ध रात्रि के बीच मैं दीजे बलि दिवाय।

॥अथ गहणा मसान का जिस को लडि लागि होय॥

दूध गेरे होर हरे पीले देय॥विधि:॥

एक हांडि लेय मँगाइ। सवा सेर राष पंजा वेका लाय सात कांकरा चुराहे कि कहि सात मूल कि दूर के सहे सात फूल कंडाई के लावै सात कौडिया काणी पावे महदि पात शीशा का प्रांदा दीजै। गल की

चौली काली कीजे।
॥दोहरा॥ बालक शीश नवाय के दीजै।
चौरै जाय संध्या समे कीजिए वाल
करो गत साय।
॥अथ जाति की मशाणि लगा हुवा होय
तिसका उपाय मंत्र लिख्यते॥

ॐ नमो आदेश गुरु को आदेश
हरिया पर्वत से हनुमंता आया हस्ता
गाँजता आया उलट पलटता आया
परपवत पहाड उखाड उषडंता आया
लोहे का कोट वज्र का कवाड़। चारों
खूंट सो वंधू जाय। जीस मे बैठे हनुमंत
वीर पूर्व का देव बाँधू। पश्चिम का देव
बाँधू। दक्षिण का देव बाँधू। उत्तर का देव
बाँधू। चारों दिशा का मसाण बंधु।
अजाऊवर वंधू। भैंसासुर बँधूँ। जल
का मसाण वंधू। थल का मसाण वंधू।
रूक वृक्ष का मसाण बाँधू। खेत घल्हाण

Scanned by CamScanner

का मसाण बँधू। चुल्ह देहली का मसाण बंधू। अचलिया मसाण बंधू। धूलिया मसाण बंधू। पित्रि मसाण बंधू। हट्कुहि-या मसाण बंधू। मृगिया मसाण बँधू। चिणगिया मसाण बंधू। षपरिया मसाण बंधू। कौडिया मसाण बंधू। गुडलिया मसाण बंधू। ठिकरिया मसाण बंधू। होली-दिवाली का मसाण बँधू। गरभ भलिया मसाण बँधू। कुलक्रिया मसाण बँधू। मावस चौदश का मसाण बँधू। जल-थल की योगिनी बँधू। पाताल का मसाण बँधू। पताल का नाग बँधू। खवीश वंधु। परि वंधु। चडेल वंधू। आवण जावण बंधु। हाड-२ वंधु। रोम-२ वंधू। वाल-२ वंधू। ईश्वर महादेव की दुहाई सबद साचा पिंड काचा फुरै मंत्र ईश्वरोवाचा। पहले मंत्र का जाप कर ले २१००० फेर गाडादे सर्व मसाण जाय।

Scanned by CamScanner

॥अथ चारों दिशा के मसाण लक्षण॥

॥दोहरा॥ अति हसे रोवे अधिक
कबि मूर्छा हो जाए। कभी उठे तन शूल
तब ग्रस्त चतर्दिश सोय उपाय।
मृत्युंजय को जाप करो होर करो कछु दान
झाडा दीजै मंत्र सो होत रोग की हान

॥अजासर लक्षण॥ अति सोवे रोवे अधिक
भूसर नाहनेय उपास रक्त जात गुदते कहयो
ना जीवन की आस

॥उपाय॥ सात अनाज का पूतला करै।
उडद की रोटी ताऊ थलै ना जान। वार
सात छुवाय के तुरत मंत्र जो जाप रोग
घटे। सभ बालक को तुरत मिटे तन ताप

॥अथ भैंसा सुर ग्रस्त लक्षण॥

भैंसे की सम तीन सम
बदन होत ना हानदार हो। तखाज
बहुतन विषे थै अति रोग विसाद

Scanned by CamScanner

॥उपाय॥

लेर सौंत चंदन सहीत वंश लौच ना पाय झाडा देके मंत्र को फेर देर पिलाय

॥अथ थलका मसाण लक्षण॥

बहुत तृषा गले को लगे होत ठीमक ना बाल श्वेत वर्ण हो देह का बाल वाय के दे। स्नान कराय मंत्र सहित पूजा करे। सर्व रोग मिट जाय।

॥औषध॥

गोरष मुंडि आन के सात दे प्याव रोग मिटे सुख बाल हो सुंदर येहि उपाय।

॥अथ योगिनी लक्षण॥

मंजे पर सोवि न ही पैंर धरन ना देय रोव देव अकाश को मिस लिन ताप आवै।

॥उपाय॥

सह देवी रस आनि के अर्ध

मिस्च ले पाय तुरत पलाव बालक को सब संसे मिट जाये।

॥अथ बुध का मसाण लक्षण॥

आठ पहर तप्त नविषे कवि उत्तर चढ जाऐ। अति सार होत ना विषे कीजै उपाया : आँव पडे कवि लाल हो कभी सकेद हो जाय। दरद उठे अति पेट में कर औषध मिट जाऐ।

॥उपाय॥ कुसम धाय माजू सहित दोरे मोचरस पाऐ। माई जव आन के षुवतरे रगडाय। वेल गिरू को गेर कै पोस्त डोडे संग कुटछाण। चूर्ण करो द्यौता जे जलसंग रोग मिटे। सब बालक को २-३ ही जो खान। दो रक्ति नित दीजिए होत रोग की हान।

॥चेत मसाण ग्रस्त लक्षण॥

भूख होवे बालक को अन्न

नहि मन भाए। हरिवस्त देखे बहुत। गुनीजन दीयो बताय

॥उपाय॥ फूक सपारि सिप को होर कौड़ि की छार। बालक जाय चटाय है देतह रोगनिवार। श्यामवर्ण सकै घूलापरत दटोर गात मंत्र पढ़ै पूजा करै होर दिवावे दान मृत्युपुंज का जाप करो सब होवै कल्याण।

॥अथ अचलिया मसाण लक्षण॥

नाभा जो सूको रहो गुदा गड्ढा हो जाए। सर्वन जो को मल जानियै ता मसाण तम जोय

॥उपाय॥

बंबी जो माटि आन के वावि जजोलया गुड जो पुराणा मैल के तलवे ऊपर आन दै। पात आक के मथ कर चौपड घी वरसन काढि काढ के तां जाकरक पीव

Scanned by CamScanner

॥ चौपाई ॥ पातो कोमल पानि ले बालक को सनद में लेही। तवे सो को जोत ल्याव। स्वक अंक किनासा देवय।

सभ

॥ अथ मसान धुलिया अथ आकाश योगिनी ग्रस्त लक्षण ॥

॥ चौपाई ॥ योगिनी जब वल करती आय। मुखे आँवल पीवत कछु जाय। सवा मसेलग वली हो इसका उपाय कीजै।

सभ कोई दो तीन मसाण जो होर
होई संजोग निवमाह पीती चा होर।

दउ फुटिया मृगिया दिया बताय ताको अव लक्षण। सुनो तो नो अंक सुभाय मृगि से उतपत कच्चा मसाण सुभाय।

॥ लक्षण ॥ कान नर्म होर कप्ल मली सीत हाथ होर पांव। बालक को यह रोग ही तामसाण प्रभाव।

Scanned by CamScanner

॥मृगिया लक्षण॥

॥दोहरा॥ हाथ पाँव फुट तरहै कार सरद ताही होत। आँख मीच बोले नाहि मृगिया कहि ये सोय।

॥उपाय॥

॥चौपाई॥

चौथे दिन नाम सत महीन ता पानो कुछ मले ही। ना पानी कुछ मिले द्वि जवायण देहि। ताकि कहि नास सुनो हि।

॥दोहरा॥ आधी मिर्च रलाय के नास बालक को देय। बिना जाने दे नाहि जो जाणे सो देहि। उघ्न वाहि सो दीनिर। सकल रोग मिट जा

॥पुनः लक्षण छंद परी का॥

कांपे सीर हौर पाँव। नेत्र हो श्वेत ही आकाश परि गतस्त जाय। जो जाणे भेत ही तिस का करो उपाया

Scanned by CamScanner

तुरत संकट मिटे करो विधि संयुक्त
रोग मारे कटे।

॥उपाय॥

॥चौपाई॥

सवा सेर गेहूँ तुम लेह ताम
वीडा पान धरेह सात पताले तुम
धरो। आकाश परि का भय मत करो।
हाँड विच धरो धरमाह सात भांत की
सात भांत की योगिनी जाय। अंक सराही
कोरी लेह दहि भात मध्य धरे। कपाल
छवाय मड़ैरे राखो। सात पलीते दिन
में भाखो कोरे दीवे ही सो वालै। कट कते
लदीवे मँडा लो जाय। सो फेर आवे
नाहि। यंत्र व गले मे बाँधे सहै

॥अथ उत्तम ठिकरीया अति मसाण लक्षण॥

ताको बालक तुरतम रहे जिह्वा लाल
फुणगनी देह। उर्द्ध स्वास हार तजे
आहार जानो खंग रोज निरधार

Scanned by CamScanner

॥पुनः छंद॥

पैर हटो रेगात कुष्ट सम जाणिए
लुति सगरे अंग। पै पर भावहि अतिसार
तन थाय चित्त विष्टा होवे ताको जाय
अनंतर यूँ कह मंत्र जाय साण गुरुनाथ
हटावे बालको धोरै मत आवे।

॥दोहरा॥ पीपल की सेवा करो होर
पितरा को मानो। घड़िया भर को दीजिए
होत रोग की हान। मृत्युंजय का जाप
करि २० हजार प्रमाण पाछै जपे जो
मंत्र को होत रोग की छार ॥अथ गर्भ

धन ॐ नमो आदेश गुरा को गर्भ थंभैयी
तागा॥ गुरुनाथ थंभावे ताकि रिछा पार्वती करे
गौरा काता कच्चा सूत डोरा कर
महादेव अवधूत माता का लौहु पिता का
लोहे का कोट वज्र का बाण गर्भ की
रक्षा रेहनुमान पींड काया मेरा शब्द
साचा। फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा

Scanned by CamScanner

॥ विधि ॥

सात बार मंत्र एक-२ गाँठ देणी। तागा इकी तार का करना फेर धूप देणी। हनुमान जी का रोट करणा। जरूर तागा नारी के बाँधना। गर्भ नहि गिरै। मंत्र जप लेय हजार तीस ३०००० पहले।

॥ अथ परियाँ कोप मरमाणीलक्षण ॥

कोप आन जिस पर करे, ग्रस्त बालक को आन। जीभ बाहर मुख से रहे। अति मार बहु जान।

॥ औषधि ॥

हल्दी पूर्वि आन के मोत्थे तहे मिलाय। अजवायण से बला हित गुड़ जो पुराणा पाय। वट्टि रक्ति दोय की श दिन लगखाय। मंत्र जपे आगे कहूँ सुंदर येहि उपाय

॥ मंत्र ॥

ॐ नमः हनुमंताय वज्र की वाड

तोड़ता आय। अब वीर हनुमान तेरे सिर भूरे बाल कहो लगाई पितवार। काली विणी लाल पलाण लालप पारा जिस पर आई सीतला मशाणि। उस की था मसाणी। धूई मशाणि। धूमिया मसाणि। सूकिया मशाणी। फुलकिया मसाणी। कोड़िया मसाणी, कलेजे पेट मसाणी, साइया मशाणी जीन-२ आई सोई हनुमंत वीर बंध कर लेयाव। ना ल्यावे तो अत्रि ऋषि की दुहाई। कसरो की दुहाई। माता अंजनी की दुहाई। महादेव की दुहाई। शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

मंत्र जप ले हजार २० प्रथम फेर झाड़ा देणा सर्व जात की मशाणि जाण।

॥ अथ मसाणि का यंत्र ॥

इस यंत्र नु अष्टांध गोरोचन सो कांसी की थाली। लिखावा

ॐ भ्रीं	ॐ ह्रीं	ॐ स्मीं
ॐ स्त्रीं	देव दत्त	ॐ स्तीं
ॐ हों	ॐ क्रां	फट स्वाहा

Scanned by CamScanner

भोज पत्र पर लिख गले बाँधना। झाड़ा देणा सर्व जात की मसाणि जाय।

॥ हौर दिवाली का मसाण चौपटि बाल लक्षण ॥

जन्मत ही सूकत रहे। पिछै सूकत जाय। त्वेष्टा हरै जो जानिये गुदा जो रक्त रहाय चारो लक्षण दोष के लिङ्ग स्वेत जो होय तिस ही चौपट जानिए। कहै धनन्तर सोय।

॥औषधी॥ सठि चावल महंदी मेव ज्ञात काल मल पानि पीवे। सीप दोय बालकं को देय रोग जाए। इव वैद्य कहेय मखणी घी सव अलूणा खाय।

॥अथ कवेडे का उपाय तंत्र से॥

राख पंजावे कि लेय आवे तिस के लड्डू ७ बनावे। मंत्र पढे ऊपर १० बार। बालक रोग को तुरत निवार।

Scanned by CamScanner

॥मंत्र॥ ॐ नमो हनुमंताय महाबलवंताय सीता सोक निवारणाय लंका दहन जाय। मम बालक रक्षनोय। मसाण कंवेडा फका इस कि रिण करि अंजनी माई। शब्द साचा पिंड काचा। फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा। मंत्र जप ले १६००

॥पुनः औषद कंवेडे की॥

गज विष्टा को लाय के ताका रस कड़वाय। तुरत दीजिए बालक को तुरत कंवेडा जाय

॥पुनः उपाय॥ पीपल दाड़ि आन के वट दादी जो मिलाय। मिर्च एक ताहि डार के खूपत रे रगड़ाय। उष्म जो कर के हि दिजीए तुरत कंवेडा जाय। भणे धनंतर रोग कंवेडा जाय।

॥॥ इति श्री धनंतर विरचितं मंत्र तंत्र औषधी बालक चिकित्सा। संवत १६५० कार्तिक कृष्ण पक्ष ॥॥

Scanned by CamScanner

॥ॐ ॐ गणेशाय नमः। अथ बालक उत्पीडते १० दिन तक चिकित्सा॥

ग्रस्त पूतना आन के ~~धनन्त~~ धन्वनि नाम कहाय।

(दि०१) जन्मत ही दिन प्रथम का जो बालक हो जाय। ॥लक्षण॥

बालक दूध ना पिवे सिर मारत और पाँव। बहुत करावत लाल मुख योगिनी ग्रस्त व जान।

॥बलि॥ मछली मधुरा दुग्ध ले गुड़ सम ताहि मिलाय बलि जो दीजे प्रात उठ सम पीड़ा मिट जाय।

॥मंत्र॥ ॐ नमो धनन्वनि भगवति नाम इवां बली गृहण बालक का नमुंच स्वाहा।

दि०२॥द्वितीय रात्रि का बालक होय॥

उदर हो स्वास बकरी समे मुत्र प्रकाश रुदन करे ले नेत्र मिचाय ग्रस्त योगीनी

Scanned by CamScanner

ताको जाये पंच गव्य सो करे स्नान
॥ बलि ॥ ध्वजा पताका तंडुल पीत वस्त्र
तहा दीजिए लौंग केसर मृन्य पात्र माह
धरे। दक्षिण दिशा बली दे जाय। सम रोग दूर
हो जाय

दि० 3)॥ अथ तृतीय रात्रि ॥

कंकोलि पूतना दूध गेरे, खाँसी
उछले, उदषे, गज दंत, बिल पत्र, शिव का
चडाय। बकरी के मूत्र मे पीस ले फेर।
बालक के अंग लगाय। सर्प कंच धूप दिवाय
निव पत्र ताहा दे मिलाय स्नान बालक को
करेवे। नै वैद्यं की दे बली।

दि० 4)॥ अथ चतुर्थिया दिन बली ॥

उल्टी करे सोवे नहि ज्वर खाँसी तृषा
व्य स्नान। तत्ते पानि के साथ स्नान
सर्प की कंज हाथी दंद। पीली सरसों
इह की धूप देणी। नैवेद्य पुष्प दीप
साँय काल में जल मे तरा देना।

Scanned by CamScanner

दक्षिण दिक मे देनि बली। ॥इति चतुर्थ रात्रि बली॥
दि० ५)॥अथ पंचम रात्रि बलि॥

हँसनी नाम पूतना मुकिया वटे, रोवे, हँसे अखाँ मिचे अंका इले भवो

॥उपाय॥

मजीठ लोद हरताल गोमूत्र मला के स्नान करावे।

॥बली॥

पुष्प धूप दीपक तंडल मिटि के पात्र मे धरे घर के पूर्व दिशा में बलि देय।

॥धूप॥

शिव निर्माल्प सर्प की कंज गुग्गल निमपत्र घृत बालकन धूप देनि। इति पंच रात्रि

दि० ६)॥अथ शशी रात्रि बली॥

हस्त पैर कंपे चुंचे नाहि रुदन करे बेसुध स्नान कि

॥औषधी॥

खरहटि, गुग्गल, पीली सरसों। यह धूत में पा के। उस धूत की मालस करनी ऊपर से पंच गव्य से स्नान करना रक्त वस्त्र सो शरीर पोंचना फेर नैवैद्य की बलि देनी। धूप दीप विच धरावैं। इति षष्ट रात्रि

दि० ७॥ अथ सप्त रात्रि॥

मुक्त केशी पूतना। अति ग्रसे रोग। झंवाई, अति सार, चमन, बलि धूप दीप नैवैद्य दक्षिण दिशा बलि दे जाय। व्यघ्र नख धूप इति सप्त रात्रि बली

दि० ८॥ अथ अष्ट रात्रि॥

दंडनी नाम पूतना, रोग, स्वास नाश वेरु के रात दिन रोवे। कंवे ज्वर सिंहरवा लाल व्याघ्र नख धूप देनी इति अष्ट रात्रि

Scanned by CamScanner

(दि०९) ॥ नव रात्रि ॥

अजामेखि पूतना रोग के रोवे ~~ज्वर~~ स्वास, मुन्किया को वट्टे मेट्टी के पात्र में दुग्ध गुड मिलाय के। दक्षिण दिक् में रखन। मध्याह्न में फेर दान। अघँ शुद्ध करावण। इति नवरात्रि

(दि० १०) ॥अथ दश रात्रि ॥

रोदनी नाम पूतना॥ ज्वर झंवा इले लेवे। बहुत रोवे।

॥बलि॥ चावल बना के पुष्प धूप दीप दक्षिण मे देना। इति दश रात्रि

दि०११)॥अथ एकादश इया नेव अथ ~~द्वादश~~ द्वादश मास बलि॥

मास जात बालक तब हिव शकुना नाम पूतना जोया ग्रस्त जात बालक तबहि भूख प्यास लागत जबहि रोवा। रात दिन रोवे। लाल मूते। नेत्र मिचे। बेदिल हो के सुँघे। सुध्या ना जावे। तन की सुध ना

रहे। ताप

॥बलि॥ मॅडि मध सत पताका मध्याह्न में बलि देवे। इति प्रथम मास

॥अथ द्वितीय मास॥

श्वेत गत होवे। दूध पिया ना जाए। शरीर सूखता जाए। रौंक कंठ कफ बाय

॥बलि॥ चावल दुग्ध में गुड़, चामुखा चिराख, नीब पत्र को धूप, मध्य दक्षिण दिक में बली देणी। सप्त रात्रि। इति द्वितीय मास

॥अथ तृतीय मास॥

ज्वर जादे, नेत्र मिचे, सोवे, रोवे शरीर को तोड, स्तन ना लेवे। इमड़ा होवे। धूप शिव निमल्यि सरसों मा जिरे रोम घृत

॥बलि॥ घना सात पुष्प कनेर के सहित हल्दी घृत मिष्टान बली देय दक्षिण में संध्या समे देनी। इति

Scanned by CamScanner

मा० ४) ॥ अथ चतुर्थ मास बली ॥

भक्षणी नाम पूतना सूकत सारा शरीर, झंवाई प्यास।

॥ बलि ॥ घ्वना७, तंडल पुष्प दक्षिण दिशा में बलि देणी। इति

मा०५) ॥ अथ पंचम मास बलि ॥

करकट्टे नाम पूतना

॥ रोग ॥ सना हाथ कंवे। दूध ना पीया जाए, बेसुध, बार-२ रोवे।

॥ बलि ॥ उडद काले, लयसि अर्द्धरात्रि में बली देणी। इति

मा०६) ॥ अथ षष्ट मास बलि ॥

बहुत स्वास रोवे। सूल बली

॥ बली ॥ चावल, यव, मुर्गा, एक कुलथी, मिट्टे के पात्र में घर के चिराग तिल के तैल का बलि देणी। इति षष्ट

Scanned by CamScanner

मा०७)- ॥अथ सप्तम मास बलि॥

बालक का रोग तोड़ से रको रोवे खाया नाहि जाय। ताप, स्वास, खांसी, नेत्र मिचै

॥बलि॥ उडद, भात, लोबिया, साग, सौये का, चंदन, धूप, तिला का तेल का दिवा, मिट्टी के पात्र में दक्षिण दिक् में बलि देय। इति

मा० ८) ॥अथ अष्टम मास॥

करजा नाम पूतना

॥रोग॥ फोडे, रोवे, खजावे, सर्वप जैसी फुंसियाँ स्वास, बहुत काँपे. स्वेत गत, मुख सूखै, बेसुध होवे

॥बलि॥ सतनाजे को पीस लेना, हल्दी, तेल मिलाय के वटना बालक के मलना, फेर उतार के मैल, पूतला बनामना, सिंदूर, झडावणा, लौंग अगाडि रखणै, जरद घडे में बालके, सिर छवास बार

बराबर वस्त्र ले के बर्तन विच धराऐ। इति

(दि०९) ॥अथ नवम मास॥

कुंभकर्णिये नाम पूतना।

॥रोग॥ ज्वर, पेट अफारा, रोवे खाँसी, स्वास, चावल बनावने, खिचडी, कोरी सनक में रखे, घृत का दीवा इति

(दि०१०) ॥अथ दशम मास॥

तामसि नाम पूतना।

॥रोग॥ नेत्र ते देखि नही। माता का दूध पीवे नही, उपरन स्वास आवे।

॥बलि॥ लाल तंदल मछी मास, दीवे १० चून के बालने, कजिया १, गुड दुग्ध पाय, पूर्व में बलि देणी इति

(दि०११) ॥अथ एकादश मास॥

राज्ञी नाम पूतना

॥रोग॥ स्वास, कंवेडा रोग, शरीर

छिन-छिन में घटे। कभी स्वास रुके।
॥बलि॥ प्रातः काल में दे। मद्य, मॉस, चावल सिंच धरे। दीपक तेल का दक्षिण में देना इति

(दि०१२) अथ द्वादश मास
टक मछि तरला के दक्षिण में देना। इति

ॐ श्री गणेशाय नमः
॥प्रथम वर्ष लगत बलि॥ [redacted] नंदनी पूतना।
॥रौद्र॥ [redacted], नेत्र मीच ले, वमन हो, अति मार, बहुत दाह, खजली, ज्वर
॥बलि॥ कमल डोडे, कैसर (रोटि), उडद, भात, तिला के तेल का दीना 1, हरताल, मिट्टि के बर्तन में धरके पूर्व में बलि देणी। इति

॥अथ द्वितीय वर्ष बलि॥
रोदनी पूतना

Scanned by CamScanner

॥रोग॥

स्वास, खाँसी, देह लाल, अतिसार, सन्ना हाथ फुरे

॥बलि॥

रिवल के सत्तू, खंड मिला लेनि, कमल लोविया, हाँडी तिच धर के उत्तर दिशा बलि देणी मध्याह्न में। दिन ७। इति

॥अथ तृतीय वर्ष बलि॥

धन्वानि पूतना

॥रोग॥ रुदन करे, सोवे

॥बलि॥ पूडे ७, चावल, रोटी, तिल, मृग के बालों की ले कनाली में रख के धरणा तिला के तेल का चिराग। पंच गव्य से बालक न स्नान करावणा। पंच (५) रात्रि बलि देणी। इति

Scanned by CamScanner

॥अथ चतुर्थ वर्ष बलि॥

कुमारी पूतना

॥रोग॥ ज्वर, गात दुख, मुख सूखै

॥बलि॥ पूड़े, लड्डू, लौंविया, सहत खीर मध्या मैं तिला के तेल का चमुखा चिराग। चंदन, धूप, दीप, दक्षिण में ले जाय के जल में तराय दे ७ दिन। संध्या समै। इति

॥अथ पंचम वर्ष बलि॥

॥रोग॥ ज्वर, शरीर व्याकुल, शूल, अति सार, नेत्र रोग

॥बलि॥ अंडा मुगी का 1, वरणा चरखा, पिंडा सात भांत का वस्त्र, लौंग, इलायची, बुकलेल, दीपक, तिल तेल का ~~वृक्ष के नीचे पश्चिम में बलि ३ दिन दवे।~~ काच्ची सब चिज बिच धरले। लड्डू, रोटी, सत, खिल अवेपा से धरै।

Scanned by CamScanner

बालक के सिर नुवाय के पूर्व मे बलि देनी इति नंदनी पूतना।

॥ अथ षष्ठ वर्ष बलि ॥

कौमुदि पूतना

॥रोग॥ अति ज्वर, आकाश को देखे, रोवे बार-२, नैत्र मिचे, भोजन पावे नाहि, शरीर की खबर नाहि रहे। सत्तू, भात लेविाय खिचडी दूध मिलाय। पुडिया ७ ले। हाँडी बिच पाय। ऊपर पूडे पूलपसि दीपक ४ दक्षिण दिशा मे दिन ७ इति

॥अथ सप्तम वर्ष बलि॥

॥रोग॥ खाँसी स्वास रोवे, दूध उलटे, अन्न खपे ना,

॥बलि॥ तंडल पीले, मुर्गी का आंडा, कनेर के फूल ७, प्रातः काल देवे। पंच गव्य स्नान इति

Scanned by CamScanner

॥ अथ अष्टम वर्ष ॥

नंदनी पूतना

॥ रोग ॥ सिथल देह, पेट उफारा, शूल

॥ बलि ॥ खिचडी, साग, लौविया, मछी, खिलां, दीपक १ हाँडी विच धरे दखिण में रात्रि ३ देवे । इति

॥ अथ नव वर्ष ॥

हँसनी पूतना

॥ रोग ॥ शरीर सूखे, खाँसी, निद्रा बहुत, अतिसार

॥ बलि ॥ ~~वस्त्र~~ तंडलाल, पुष्प पीले, मुर्गे का अंडा, लड्डू ५, लौंग, लैची, पूडे ५, ऊपर ~~धरने~~ दूध पाय दीपक, धूप, पूर्व दिक में देणा । इति

॥ अथ दश वर्ष बलि ॥

रौदनी पूतना

॥ रोग ॥ ~~गात्र~~ नील वर्ण देह का, हिचकी

Scanned by CamScanner

गत सूके
॥बलि॥ चावल, लोबिया, खिचडी, खिलां
दक्षिण में देवे। समेत दीपक देवे। इति

॥अथ एकादश वर्ष॥
बालनी नाम पूतना।
॥रोग॥ तृकछाली
॥बलि॥ कोरा पात्र में स्वेत पुष्प २५, चावल
~~का~~ लाचि पाय, दीपक, पीपल वास धराये.
इति

॥अथ द्वादश वर्ष॥
ब्राह्मणी पूतना
॥रोग॥ झंवाई बहुत, नेत्र दुखे
॥बलि॥ बॉस्पती के चावल, घृत, बूरा बिच
पावे, रोटी, लोबिया, तिल के तेल का दीपक,
फूल चमेली, ऊपर लौंग, इलायची
संध्या समय नैऋत्य में बलि

Scanned by CamScanner

॥मंत्र॥ ॐ नमो भगवती नृसिंह नृजंभणि,
इदं बलि गृह्य-२ बालक मुंच मुंच स्वाहा।
१२ इति श्री धनन्तर विरचते द्वादश वर्ष
बालक चिकित्सा कथनियं संपूर्णम् सनौराख्य
-न गरेघ्नु राम प्रति
संवत् १९५० कार्तिक शुक्ल
दशमी शनीदिन समाप्त

असल मुताबिक नकल
चैत्र शुक्ल पक्ष संवत् विक्रमी २०५६
शाका १९५० सन ईस्वी २००० आश्लेषा
गुरुवार दशमी सक्रांती वैशाख

पं० करम चंद तथा नरेन्द्र शर्मा (पोत्र)

ईशान	पूर्व	अग्नेय
उत्तर	✳	दक्षिण
वायव्य	पश्चिम	नैऋत्य

अथ समाप्त

Scanned by CamScanner

ॐ श्री गणेशाय नमः
शारदा व धनन्तर वैद्य नमो नमः
धनन्तर वैद्याय नमः

नुस्खे
बीमारी - औरत के दर्द, गर्मी, गर्भ होने का नुस्खा

नुस्खा - मुंडी बूटी, कासणी, गुलाब के फूल, छोटी इलायची, मलठी, सौंफ, चंदन बूरा सारी चीजें बराबर वजन की पीस कर पानी में डालकर मामूली आग पर गर्म करके 8 घंटे भिगो कर अर्क निकालना (मल के निचोड लेना)। पानी 600 ग्राम चीनी ले कर चाहणी बनानी। सारी बूटियों का पानी मिला कर छान लेना। निरने कालजे सुबह के समय रोज पीना। रोग दूर होवे।

Scanned by CamScanner

② बीमारी- औरत की मासिक (हैज) बीमारी बंद करना।

नुस्खा- जामुन बीज, झाड़ी बेरी का शक्क बराबर वजन ले कर पीस कर हर रोज एक चम्मच पानी के साथ देना।

③ बीमारी- मासिक (हैज) ज्यादा कराना

① नुस्खा - गाजर बीज, सौए, मूली बीज, सफेद जीरा, पुराना गुड़। सब वस्तुऐं पीस कर काढ़ा बना के देना।

② नुस्खा - तुम्मे की जड़ - पेंसिल जैसी उसके ऊपर रुई लपेट कर धरन के मुँह में रखनी।

④ बीमारी- हिचकी की दवाई

नुस्खा- पीपल की सूखी टहनी जला कर, गुड़ मिलाकर (राख के साथ) पानी के साथ देनी।

Scanned by CamScanner

④ नुस्खा - नारियल का छिलका चिलम में पाकर पीना।

⑤ बवासीर की दवाई
नुस्खा - करेला तथा पीपल का पत्ता रगड के निचोड के पानी देना।

⑥ पेशाब खोलने का
नुस्खा - कलमी छोरा, पूदीने का सत - $\frac{1}{2}$ हिस्सा (कलमी छोरे का), जौं खार, छोटी लैची - 3 मासे की पूडी पानी के साथ देने से पेशाब खोले।

⑦ बच्चे को डबा या साँस के साथ हिचकियों का दर्द। साँस खींचना
नुस्खा - सहे का कान रगड के देवे। आराम होवे
↳ पानी

Scanned by CamScanner

8) बच्चे की उल्टी के लिए-
नुस्खा- लैंचीयों का फोलक पानी में उबालकर ठंडा होने पर चम्मच-2 देना। आराम होवे।

9) दवाई मरोड़ की-
नुस्खा - सौंफ, जंग हरड, सुंड, जमैनु पूजा मिश्री। ये सारा बराबर वजन ले कर, घी पा कर, मिश्री पाकर। ये उमर के हिसाब से दही, लससी या अनार दाने के पानी के साथ देना। आराम होवेगा।

10) बीमारी गंबीर की-
नुस्खा- मुँह में हरड रख के ऊपर आकका दूध लगाना (गंबीर के)। आराम आवे।

Scanned by CamScanner

(11) तुसार, खाँसी के लिए
नुस्खा- मीचके का पानी या पत्ते, लाल फटकडी बराबर वजन ले कर गोलियाँ (चने के दाने) बनानी। फायदा होवे।

(12) अंबर धारा बनाने के लिए-
पीपल मिंट-५ मासे, जवायण सत-५ मासे, लैची सत-५ मासे। इन तीनों को मिला कर अमृत धारा बन जाएगी।

(13) जल के लिए
①नुस्खा-सरों के बीज, बडी लैची के बीज खाड के निसपाक बनानी। और नास लेनी।

②नुस्खा- रीठे के छिलके, समुंद फल

Scanned by CamScanner

रगड के नास बनानी। नास लेनी। उल्ल बंद होवे।

③ नुस्खा - 1 ~~उस्ता साफ रहाही~~
1 तोला लाल दवाई, 8 तोले मैदा, 1:8 का अनुपात की नास बनाकर लेनी। आराम आवे।

⑭ लडका पैदा होने के लिए:-
नुस्खा - पीपल की गोलां - 5 तोले, 1 तोला - नाग केसर, पीस कर आदमी दूध के साथ 3 मासे की पुडी रोज खावे। आदमी की ताकत पूरी 15 दिन होवे।

⑮ कसराली का दर्द
नुस्खा - हुलहुल पीस कर ऊपर बाँधनी।

Scanned by CamScanner

(16) दिमाग के लिए

नुस्खा - मरब्बा ओला, मरब्बा सेव, मरब्बा हरड़, मरब्बा बहि (20 दाना), गुलकंद, चाँदी के बरक में लपेटकर दूध के साथ देना।

(17) बुखार के लिए

नुस्खा - कुवार का गुद्दा, फटकड़ी बराबर वजन लेना। ठूठी में ले पाकर, बंद कर, कपड़ा लपेटकर, ऊपर मिट्टी लगानी। फिर धूप में रखना। आग देनी (गोहे की)। काफी समय बाद देखें की यदि वो पानी में तर गई तो तैयार अगर डूब गई तो फिर से आग देकर। पुड़ियों में चाय के साथ देनी।

Scanned by CamScanner

(18) औरत का पेड़ा (हैज) (मासिक) लगातार आने वाला बंद करने के लिए:-

①नुस्खा → छोटी लैची, मेरु, अंजवार, उड़ा सक्क, खून सो सान, ये सारा कुछ पीस कर ½ चम्मच कच्ची लस्सी या पानी के साथ लेना।

②नुस्खा → दागना लगे - मौचरस, धावेयों के फूल, कल्लजा लाख (दानेदार) (बेरी दी), मिज्री बराबर वजन ले कर पीस कर, छान कर कच्ची लस्सी के साथ लेना। दाग ना लगे। बच्चा ना होरे।

(19) बवासीर के लिए

①नुस्खा- नाग केसर, फटकड़ी की खिल, जौं खार, ये सब चीजें पीस कर 3 मासे की पुड़ी पानी के साथ देनी।

②नुस्खा- कैं फल का छिलका-स्टांक,

Scanned by CamScanner

५ पुड़ियाँ बना कर पानी के साथ देवें। बवासीर तुरंत बंद होवे।
निसपार बना के देवे उल्ल (घार) बंद होवे।

⑳ नकसीर के लिए
नर-खा - आमला रसायन खाने के लिए देवे।
या अनारों के फूल बीच सुरमा रगड के नास देनी।

㉑ बच्चों की काली खाँसी
छल्ली का गुल की गली में काला सुहागा पाकर। चूल्हे में देना। जब ४ । उसकी स्वाह उम्र के हिसाब से शहद के साथ देनी।

Scanned by CamScanner

(22) बच्चे का गर्भपात या बच्चे का पेट में सड़ना

नुस्खा- काही की जड़, दूब की जड़, रेंड की जड़ का छिलका, कसूं के पत्ते/ पलाह की कुंबल, भॅखड़ा, सारे बराबर वजन ले कर पीस कर छान लेना। 6 मासे की पुड़ी पानी के साथ देनी। 2 महीने तक। नौवें महीने दवाई बंद करनी। रोज 1 चममच घी का लेना (खड़े होकर)। आराम आवे।

(23) लड़का पैदा होवे:-

① नुस्खा- मोर के पंखों की 3 टिकियों। अलग-2 काट कर अलग-2 गुड़ में मिलानी। शिवलिंगी- $\frac{1}{2}$ तोला, भंग के बीज- $\frac{1}{2}$ तोला। इन दोनों को पीट कर 3 गोलियाँ बनानी। हरेक गोली में गुड़ तथा मोर टिक्की का हिस्सा जोड़कर

Scanned by CamScanner

चाँदी के बरक में लपेटना। शनिवार, रविवार, सोमवार को सूई हुई गाय के दूध के साथ 3 दिन गोलियाँ लेनी।

② नुस्खा - अणविद्ध मोती - 21 दाने, 7 मनक्के के दाने। 3 मोती 1 मनक्के में पाने। चाँदी का बरक लपेट कर खाना।

(24) आदमी की ताकत के लिए -

① नुस्खा - बरोटे की कुँबल (टूसा) समेत दूध, कीकर की गोंद, बनौला गिरि, देसी चीनी बराबर वजन ले कर खाने को देनी।

② नुस्खा - बदाम, पीपल की दाड़ी, बरोटे का दूध, पिस्ता, कौंसी परोला। ये सब पीस कर दूध के ~~साथ~~ साथ देना।

(25) नुस्खा पत्थरी खारन का

① नुस्खा - जौं खार, मूली खार,

Scanned by CamScanner

फुकान भेद, संग-यहूद, कुशता शुद्ध बराबर वजन ले कर पीस कर 3 मासे की पुड़ी पानी के साथ देनी।

(26) बच्चों की काली खाँसी का इलाज

नुस्खा- मक्की (छल्ली) के गुल में काला सुहागा भर करके बच्चों की ताकत मुताबिक शहद के साथ दवाई देनी।

(27) खून साफ करने का नुस्खा

①नुस्खा- उशवा शरबत मगरवी ये दिया जाए तो खून साफ

②नुस्खा- ब्रह्म डंडी पीस कर पानी के साथ।

③नुस्खा- कमो (मको) का रस। मको के पत्ते चीरकर पानी में उबालना। जब पक जाए ठंडे को पोस्त की तरह मलना। पानी निकालकर ½ स्टांक चाय

Scanned by CamScanner

में डालकर रोज देना।

(28) बवासीर का नुस्खा- जाय फल का सत स्टाक लेकर 5 गोलियाँ बनाकर 5 दिन देनी।

(29) दर्द गठिया का नुस्खा- कडु को पीस लेना। फिर घी में पकाना। फिर पीस कर 3 मासे की पुड़ी दूध के साथ देनी। घी आदि के साथ देना

(30) औरत बच्चा धारण करे (जिसे बच्चा ना होवे) →

नुस्खा- असगंध- 1 तोला, पीपल की दाडी- ½ तोला, हाथी दंत का बूर, - 1 तोला, बखीर- 1 तोला, पूजा मिजी- 1 तोला, इन्हें पीस कर छान कर 7 पुड़ियाँ बनाना। पुड़ी पानी के

Scanned by CamScanner

साथ लेनी। दवाई शुरु करनी। औरत को बीमारी के बाद। बीमारी - हैज। रात को खानी। आदमी के संग समय संग से बाद 1 घंटा सीधे लेटना। दवाई की पुड़ी खाने के बाद 1 घंटे के अंदर - 2 मर्द के साथ संग करना।

(31) पेशाब खोलने का नुस्खा - मक्की (छल्ली) के बाल - 1 स्टांक, $\frac{1}{2}$ Kg पानी में गरम करने (पका लेने)। जब पानी $\frac{1}{4}$ Kg रह जाए। सूती कपड़ा लेकर छान लेना। पीने को देना।

(32) नुस्खा - खरबूजे का छिलका उबालकर (पानी में) उसका पानी देना। पशुओं के लिए भी।

(33) बुखार का नुस्खा - नीम की कुंबल, तुलसी के पत्ते दोनों 3-3 लेने,

Scanned by CamScanner

काली मिर्च-3 दाने, लौंग-1, पीस कर गोली बनानी। बीच में थोड़ा सा नमक मिलाना। गोली 1 चम्मच-2 चम्मच पानी में खोरनी। चाय के ~~बाद~~ पहले दवाई लेनी।

(33) तेइया ताप का नुस्खा- कड़ु को पीस लेना। 3 मासे कड़ु में 3 मासे चीनी मलानी। वो पुड़ी दूध के साथ लेनी। ताप नहीं चढ़ेगा।

(34) कब्ज हटाने का नुस्खा- सरनां-1 तोला पानी में उबालकर उसका पानी पीना।

(35) कान के दर्द का नुस्खा- तारपीन का तेल-1 तोला, 1 तोला बादाम रोगन बराबर वजन ले कर कान में बूँद-2 पानी।

Scanned by CamScanner

(2) नुस्खा - सरसों का तेल, प्याज 1 स्टांक कुतर कर पकाना, 2 रत्ति अफीम डालना, छान कर कान में बूँद-2 पानी।

(3) बवासीर का नुस्खा (खूनी बादी) होवे- जंग हरड़, नीम की गठोलियाँ, नमक काला, ये तीनों चीजें बराबर वजन ले कर रगड़ना कुक्कड़ (छिट्टी के पानी के साथ गोलियाँ बनानी। खुराक चने के दाने के बराबर।

(4) औरत का हैज (मासिक) खोलने के लिए नुस्खा - सुंड - 1½ तोला, सुहागा कच्चा - 1 तोला, पाकिस्तानी नमक - 1 तोला, ½ तोला - हींग, बारीक कर के छान लेना, सुआँजने के पानी के साथ गोलियाँ बनानी। चने के बराबर। खाने को दें। हर बीमारी के लिए कायदमंद यह नुस्खा

Scanned by CamScanner

(38) संग्रहणी का नुस्खा - हींग-3 मासे, गुग्गल- 3 मासे, मस्तगी-3 मासे, अफीम-3 रत्ति पीस कर छुवारा के बीच में से बीज निकालकर बीच में दवाई भरनी। छुवारे को बंद करना। आटे की रोटी में बंद करना पकाना। पकाने के बाद छुवारे जो गर्म है पीस कर चने के बराबर सुबह शाम गोलियाँ देनी। ② पेड़े में छुवारे देकर उपलों की आग में देनें। चने के बराबर गर्म छुवारों को पीस कर गोली बनानी।

(39) दिल की ताकत के लिए- बड़ी हरड़ का छिलका, सौंफ, मिश्री बराबर वजन ले कर पानी के साथ गोलियां बनानी। अर्जुन पेड़ का पानी भी फायदेमंद है। छोले की दाने जितनी गोली। खानी या मुँह में रखकर चूस्नी।

Scanned by CamScanner

(५) जिगर के लिए नुस्खा- लाल मिर्च के बीज- ½ तोला, हल्दी- 1/2 तोला, अणबुछ कली- 1 तोला, आक की जड़ का छिलका- 1 तोला, काली मिर्च। ये सब पीस कर पानी पाकरा काली मिर्च के बराबर गोली बनानी। 3 या 9 सुबह, दोपहर, शाम ताकत के लिहाज से गोली देनी।

(६) पोलियो के लिए नुस्खा- मगज- 1 तोला, बदाम- 1 तोला, कुट- 6 मासे, काली मिर्च- 5 मासे, केसर साफरान- 6 रत्ति, अंबर- 3 रत्ति, कस्तूरी- 1½ रत्ति, उतलो- 6 रत्ति (शुद्ध किया हुआ), उस्ता फलाद- 5½ मासे, सारी दवाई बारीक कर अदरक के पानी में गोलियां बनानी। काली मिर्च के बराबर गोली का वजन। 3 या 9 गोलियां 3 समय (कुल) देनी। शहद के साथ और भी अच्छा है।

Scanned by CamScanner

(42) हर किस्म के दर्द के लिए नुस्खा- रोगन मुअआ (मोगे का तेल) -2 तोले, जायफल- 2 तोले, सुंड- 2 तोले, लौंग- 2 तोले, ये सब पीस कर तेल में भूनना। छान कर मालिश करनी।

(43) जिस औरत के पानी पड़ता होवे- 250 ग्राम कुचला जला के, 5 तोले कथ्था, 5 तोले कटकड़ी की खिल, काली मिर्च- 5 तोले, नीला थोथा -4 मासे भुन कर। रीठे का छिलका पीस कर गर्म रखे तवे पर नीला थोथा के ऊपर पाना (भुनने का ढंग) चने के बराबर गोलियाँ पीस कर बारीक कर पानी पाकर बनानी पानी के साथ सुबह-शाम देना।

Scanned by CamScanner

(44) मिरगी का नुस्खा- कुंदन गोंद, तेलिया सुपारी (शीशा सुपारी), जौंद वैद्यसर, इंसान की जली हुई हड्डी। इन सब को बारीक कर के पानी के साथ गोलियां बनानी (बराबर वजन)। 2 काली मिर्च के बराबर गोलियां बनानी। पानी के साथ सुबह शाम देनी।

(45) बच्चों के कान के दर्द के लिए- नुस्खा उऽ(2)

(46) औरत के पैड (मासिक) के लिए- तवासीर 2 हिस्से- चूहे की मींगना नहीं तो सेहे (खरगोश) की, बराबर वजन ले कर छोले के दाने जितनी गोली बनानी। कच्चे दूध के साथ देनी। तवासीर- 1 हिस्सा, गेरु- 1 हिस्सा भी
(2) नुस्खा- भेड़ के लेला (बच्चा की ऊन साफ कर) 3 मासे की पुड़ी बनाकर

Scanned by CamScanner

देनी। पैंडा बंद हो।

(47) जच्चे (जिसे बच्चा हो चुका हो) औरत को बुखार का नुस्खा- 1 मघ, 3 तुलसी के पत्ते 1 गोली बनाकर चाय के साथ देनी। ये गोलियाँ सुबह-शाम देनी।

(48) लड़का होवे- पहली सुई बकरी के बकरा का नारवा सूकने पर काटना। नारवा बारीक कर (पीस कर) गुड़ मिलाकर गोली बनानी। बछड़े वाली गाय के दूध के साथ गोली देनी।

(49) रे (पीठ से पैर) का दर्द- हरमल के बीज- 1 तोला पीस कर छान कर 7 पुड़ियाँ बनानी।

Scanned by CamScanner

तिलों के तेल के साथ प्रसाद। स्टॉक बनाना (प्रसाद- हलवा)। पुड़ी लपेटकर 7 दिन चाय के साथ देनी।

(50) माता की बीमारी को अर्क देकर इलाज- अर्क कूपकला, अर्क अनाब, अर्क अंजीर, अर्क काह जमैन, अर्क मनक्का। पाँचों अर्क मिलाकर सुबह-शाम चम्मचा-2 देना।

(51) उल के लिए नुस्खा

नसादर, भूरी मिर्च रगड़ कर नासे बनानी। सूर्य चढ़ने से पहले लें या सूर्य छिपने के बाद। नासिर दुःखे ना उल बजे।

(52) बच्चा होते वक्त तकलीफ दूर के लिए

कूप कलाँ-3 मासे, केसर-3 मासे। 3 गोलियाँ बनाकर चाय या दूध के साथ।

Scanned by CamScanner

(53) सिरदर्द, ताकत के लिए

रस कपूर, लौंग बराबर लेकर घोले जितनी गोली नींबू के रस के साथ बनाएं।

~~मर्द की ताकत के लिए~~

(54) मर्द की ताकत के लिए

सालम मिश्री (अगर ना हो तो सालम पंजा) - 1 हिस्सा, सफेद मूसली - 2 हिस्से, सतावर - 2 हिस्से, मुंडी बूटी - 2 हिस्से पीस कर दूध के साथ 1/2 तोला।

~~रोठा~~

(55) खून साफ के लिए, गला बंद हो या आतशक

रोठा पीस कर चने के दाने जितनी गोली निरने कालजे लें।

(56) खून साफ वास्ते

तेज दवाई ⇒ सैंधिया सफेद - 1 तोला, तवासीर - 3 तोले, खंड - 3 तोले, पीस कर 1 रत्ती की गोली।

Scanned by CamScanner

(57) शुगर के लिए

गुडमार बूटी-1 तोला रोज उबालकर पीऐं।

(58) मर्द की ताकत के लिए

सफेद मूसली-1 तोला, बसुमंद मकर ध्वज (न हो तो सिंगरफ)-1 तोला, रुमी मस्तकी-1 तोला, सालम पंजा-1 तोला, मलठी का चूर्ण-1 तोला, शहद-1 तोला, देसी घी-1 तोला। सबकी गोली बनाकर खाने के लिए।

(59) सिल के दौरे के लिए

रसकपूर, लौंग लेकर नींबू के रस के साथ गोली बनाऐं।

(60) हाथों पैरों का दर्द

अवद सलीब पीस कर 1 मासे की गोली।

Scanned by CamScanner

(61) मर्द की ताकत के लिए
सफेद मूसली, सालम पंजा, छोटी इलायची, सतावर, कौंच बीज (छिलका उतारकर बराबर वजन दूध से लें।

(62) खून में कीटाणु पैदा करने →
सिम्बल मूसली, देसी चीनी बराबर वजन, मात्रा-9 मासे सुबह-शाम दूध के साथ।

Scanned by CamScanner

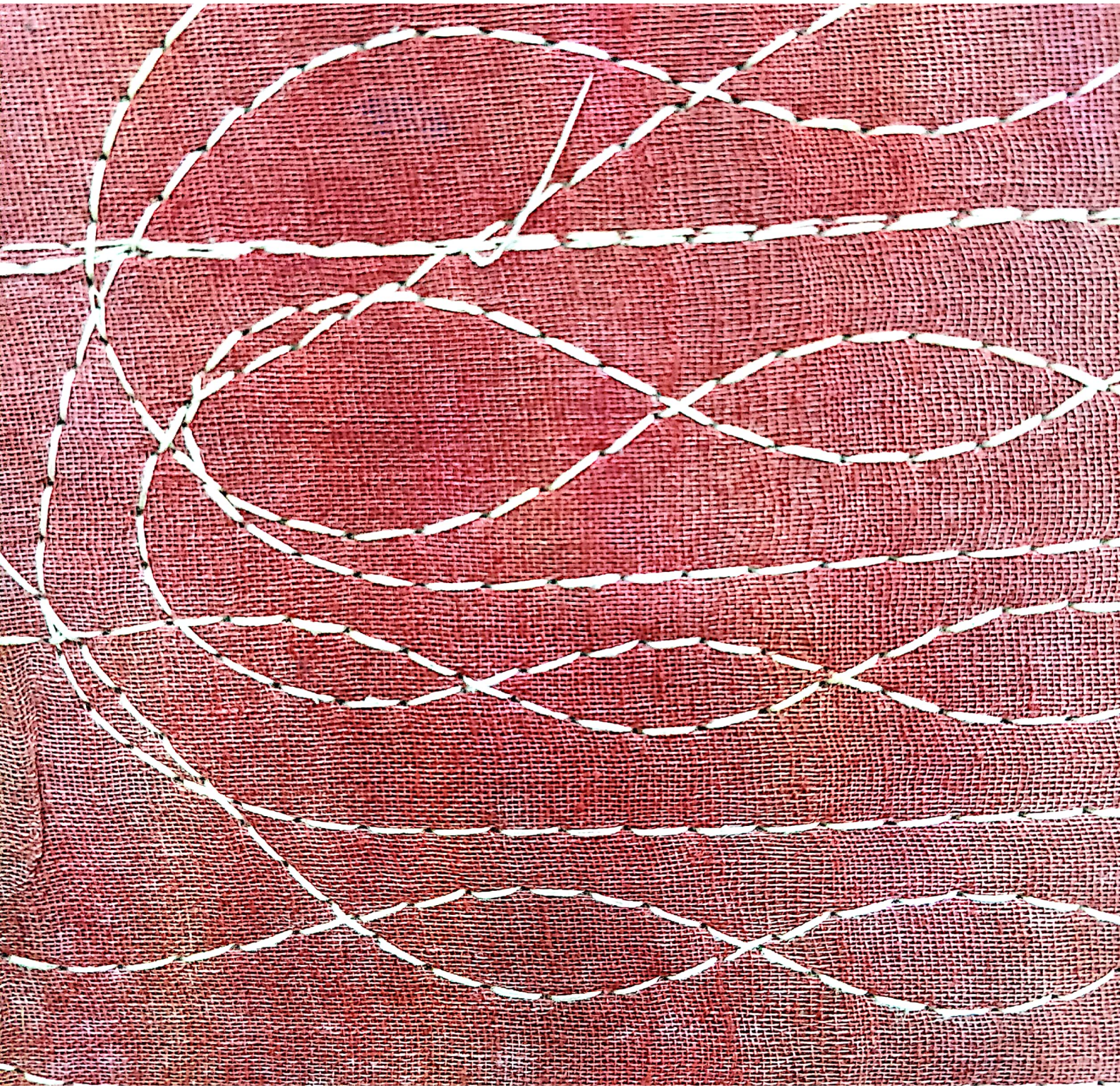

Scanned by CamScanner